परियोजना में खेती–किसानी के पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ कर किसानों का जीवनयापन मजबूत करने की सोच पर विशेष बल दिया गया है। यह मॉडल क्षेत्र विशेष के किसानों की स्थितियों व संसाधनों को ध्यान में रखकर निर्मित किया जाना है।

किसानी का पारिस्थितिक तंत्र प्रबन्धन होने पर खेती में नुकसान कम होगा। विविध परितंत्र के कायम रहने से खेती का लचीलापन बना रहेगा। चक्रीकरण प्रक्रिया जैविक संतुलन को बढ़ाता है इससे वायुमण्डलीय/पर्यावरणीय संतुलन बना रहता है।

■■■

Sir Dorabji Tata Trust सर दोराब जी टाटा ट्रस्ट
मुम्बई

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप
पोस्ट बाक्स नं० 60, गोरखपुर–273001
Phone : 0551-2230004, Fax : 0551-2230005
e-mail : geagindia@gmail.com, geag_india@yahoo.com

बाढ़ क्षेत्रों में कम लागत जलवायु अनुकूलित जीवनयापन

परियोजना : अवधारणा

जल-जमाव क्षेत्र में धान व ढैंचा की खेती

मौसम के बदलते मिजाज ने पूरे विश्व के पर्यावरणविदों को सोच में डाल दिया है। प्राकृतिक आपदाओं में निरन्तर बढ़ोत्तरी को सभी ने महसूस किया है। जानकारों का मानना है कि स्थितियाँ अभी और बिगड़ने वाली हैं। मौसम की अनिश्चितता से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला क्षेत्र कृषि है। भारत में एक तिहाई से ज्यादा खेती मानसून के भरोसे होती है। यहाँ 70 प्रतिशत जनसंख्या 1 से 5 एकड़ जोत वाली है और वे खेती या उससे जुड़ी गतिविधियों पर निर्भर होकर अपना जीवनयापन करते हैं। ऐसे में उनकी अर्थव्यवस्था पूरी तरह चरमराने लगी है। कभी रबी की मार तो कभी खरीफ की- निरन्तर अपने खेतों से जूझते किसान, अपनी युवा पीढ़ी को खेती से दूर रहने की सलाह देने लगे हैं। गाँवों से पलायन की गति बढ़ती जा रही है। खेती से जीविकोपार्जन एक सुखद स्वप्न सा दिखने लगा है। इन सबके पीछे खेती में बढ़ती लागत, घटता लाभ और मौसम की मार है। कर्ज लेकर किसान जो फसल लगा रहा है वह कभी-कभी बाढ़, कभी सूखा तो कभी जल जमाव से नष्ट हो जा रही है और कर्ज अदा न कर पाने के कारण किसान आत्महत्या या पलायन की ओर बढ़ रहे हैं।

वस्तुस्थिति से पलायन किसी समस्या का समाधान नहीं होता। कृषि देश के अर्थव्यवस्था की भी रीढ़ है, अत: आवश्यक है कि इन विपरीत परिस्थितियों में विकल्पों की तलाश की जाये। यदि किसान जलवायु परिवर्तन से अनुकूलन हेतु अपनी कृषि पद्धतियों में बदलाव लाकर नये कौशल व तकनीकी ज्ञान के समावेश से खेती करें तो उनकी खाद्य सुरक्षा व जीवनयापन सुदृढ़ हो सकेगा।

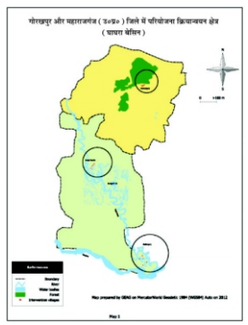

उपरोक्त स्थितियों के संदर्भ में संस्था द्वारा सर दोराब जी टाटा ट्रस्ट के सहयोग से एक परियोजना प्रारम्भ की गई है जिसमें उत्तर प्रदेश व बिहार के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में कम लागत जलवायु अनुकूलित जीवन यापन मॉडल विकसित कर खेती को सुदृढ़ करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

परियोजना हेतु चयनित संस्थाएं

1. आलोक, पश्चिमी चम्पारन, बिहार
2. समग्र शिक्षा एवं विकास संस्थान, पश्चिमी चम्पारन, बिहार
3. किसान विद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
4. स्व० ललिता देवी शिक्षा संस्थान, महाराजगंज, उत्तर प्रदेश
5. गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

क्षेत्र चयन

राज्य : उत्तर प्रदेश व बिहार

जिला : पश्चिमी चम्पारन, महराजगंज, गोरखपुर

ब्लाक : नौतन, योगापट्टी, मिठौरा, बड़हलगंज, जंगल कौड़िया

ग्राम पंचायत : 25

प्रभावित किसान परिवार : 5000

अन्य किसान परिवार (प्रसार अन्तर्गत) : 10000

निर्धारित गतिविधियाँ

क्षेत्र आधारित :
- वृक्षारोपण (खेत व वाटिका में)
- जलवायु अनुकूलित कम लागत कृषि मॉडल
- सघन सब्जी उत्पादन
- कृषि वानिकी प्रदर्शन
- पोषण वाटिका
- जैविक चक्रियकरण
- मोटे अनाज को बढ़ावा
- कृषियेत्तर गतिविधियों को बढ़ावा
- परिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन

सामुदायिक संस्थान निर्माण :
- स्वयं सहायता समूह
- किसान सुगमता केन्द्र

क्षमता निर्माण :
- क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण
- संस्थाओं का प्रशिक्षण
- क्षेत्र भ्रमण

लक्ष्य

परिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन को ध्यान में रखकर एक समुदाय आधारित जलवायु अनुकूलित लचीला जीवनयापन मॉडल बनाना जो लघु-सीमान्त और महिला किसानों के आवश्यकताओं के अनुरूप हो तथा बड़े स्तर पर उसे प्रसारित किया जा सके।

उद्देश्य

परिस्थितिकी तंत्र को सशक्त कर ग्रामीण सीमान्त समुदाय की मदद करना जिससे:

- खेती व खेती से जुड़ी अन्य गतिविधियों पर निर्भर छोटे-सीमान्त महिला व भूमिहीन किसानों को जीवन यापन व आजीविका के बेहतर विकल्प और अवसर उपलब्ध हो सकें।
- जलवायु परिवर्तन और आपदा को सहन करने वाली फसलों और जीवनयापन के तंत्र को बढ़ावा देना।
- समुदाय आधारित स्वप्रबंधकीय संस्थानों को तैयार कर क्षमतावान बनाना
- क्षेत्र से प्राप्त अनुभवों व सीख को स्थानीय स्तर व अन्य जलवायु दबाव वाले क्षेत्रों में प्रसारित करना

मुख्य चुनौतियाँ

- जलवायु का अनिश्चित व अतिरेक बदलाव, कम लागत अनुकूलित कृषि मॉडल को विकसित करने में बाधा बन सकता है।
- जानकारी की कमी और नये प्रयोगों से भय लगने के कारण समुदाय के लोग पीछे हट सकते हैं।
- समुचित बाजार की अनुपलब्धता कृषियेत्तर गतिविधियों के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन में कमी ला सकती है।
- जलवायु अनुकूलित कृषि मॉडल को अन्य क्षेत्रों में प्रसारित करने के पूर्व वहाँ की स्थानीय परिस्थितियों व उपलब्ध संसाधनों के आधार पर परिवर्तन व समायोजन कर सकने की सक्षमता।

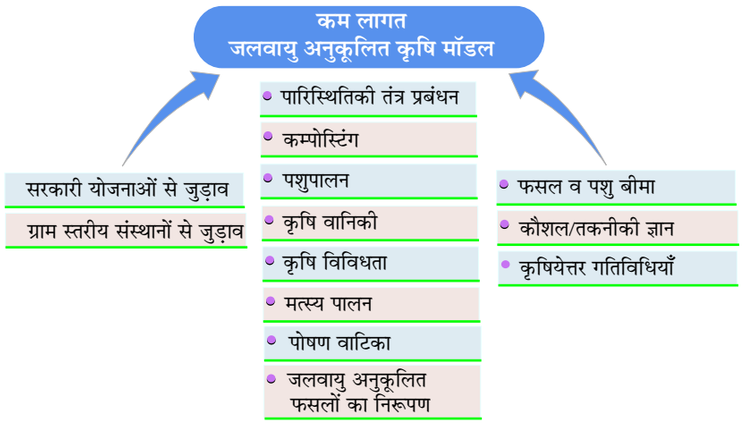

उपरोक्त मॉडल बदलती जलवायु के प्रभावों को कम करके किसानों को सुरक्षित जीवनयापन की तरफ से जाने में सक्षम होगा। खेती में लागत कम व लाभ अधिक तथा नुकसान के खतरे कम होने से युवा पीढ़ी की रूचि भी खेती की तरफ बढ़ेगी। किसान परिवार की वर्ष भर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।